IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिमाचली लोक संगीत में व्यवहारित लोक तालों का सांगीतिक अध्ययन

डॉ0 राजेन्द्र सिंह तोमर

सहायक प्राध्यापक - संगीत गायन

राजकीय महाविद्यालय सिराज

जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश

सारांश

ताल संगीत का प्राण है जिस पर संगीत कला की भव्य ईमारत विद्यमान है। गायन, वादन तथा नृत्य की शोभा ताल से ही है। ताल वाद्यों बजने वाली ताल द्वारा जब गायन तथा वादन के समय को मापा जाता है तो उससे एक अद्भुत आनन्द की सृष्टि होती है। लोक ताल हिमाचली लोक संगीत के अन्तर्गत स्थानीय जन-मानस की हर धड़कन से सम्पृक्त है। लोक गीतों, लोक नृत्यों तथा लोक नाट्यों के उद्भव एवं विकास के साथ-साथ जब लोक वाद्यों का उद्भव एवं प्रचलन हुआ होगा तो वादनस्वरूप जो कुछ भी गीत या नृत्य की संगति हेतु लोक वाद्यों पर बजाया गया होगा, उसे 'लोक ताल' कहा जा सकता है। अतः यह स्पष्टतः दृष्टिगोचर है कि लोकताल का उद्भव एवं विकास भी लोकगीतों, नृत्यों तथा लोकवाद्यों के साथ ही हुआ है। लोक संगीत के अन्तर्गत गीत तथा नृत्य की संगति हेतु वाद्य वादन का एक व्यवस्थित एवं प्रतिष्ठित क्रमबद्ध वादन 'ताल' अर्थात 'लोक ताल' के रूप में अवतरित एवं विकसित होकर आज भी प्रचलित है। हिमाचली लोकतालों के उद्भव एवं विकास का श्रेय यहां के मंगलामुखियों तथा व्यवसायिक जाति के लोगों को जाता है, जिन्हें विभिन्न जनपदों में ढाकी, तूरी, बाजगी, बेड़े, बजन्तरी, हेसी आदि कहा जाता है। लोक गीत के माध्यम से जन-मानस के उद्गारों का स्पर्श जब लोक वाद्यों पर बजाई जाने वाली लोक तालों से होता है, तो वह अद्भुत सौन्दर्य से सम्पृक्त होकर स्वार्गिक आनन्द की सृष्टि करते हैं। लोक ताल हिमाचली जन-मानस की हर धड़कन से सम्पृक्त है। यहां सुबह से शाम तथा जन्म से मृत्यु तक के समस्त क्रिया कलापों में लोक तालों का व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। हिमाचली लोक तालों के नामकरण में विविधता होते हुए भी कुछ तालों को बजाने की विधाओं में समानता देखने को मिलती है। यहां समस्त क्षेत्रों की अपनी विधा और स्थानीय नामों से लोक संगीत के अन्तर्गत लोक तालों का प्रचलन दृष्टव्य है।

सूचक शब्द:- लोक ताल, वादनस्वरूप , मंगलामुखियों, स्वार्गिक आनन्द, व्यवस्थित एवं प्रतिष्ठित ।

हिमाचली लोक संगीत में व्यवहारित लोक ताल के प्रस्तुतीकरण से पूर्व 'ताल' शब्द की व्युत्पत्ति एवं ताल के उद्भव एवं विकास सम्बन्धी विवरण प्रस्तुत है।

ताल शब्द की व्युत्पत्ति-

'ताल' शब्द की व्युत्पत्ति 'ता+ल' (ताण्डव के 'ता' तथा लास्य के 'ला') के संयोग से मानी गई है। ताण्डव व लास्य नृत्य के दो भेद माने जाते हैं। जो आज भी प्रचलित हैं। 'ताण्डव' नृत्य के अविष्कर्ता भगवान शिव तथा 'लास्य' नृत्य की अविष्कारक माता पार्वती को माना गया है। कहा गया है कि 'ताल' शब्द का अर्थ- 'शिव-शक्ति' (ता- शिव, ल- शक्ति) है।"[1]

संगीताचार्य कोहल के अनुसार "शिव एवं शक्ति के संयोग से ताल की व्युत्पत्ति हुई है। 'तकार' शिव एवं 'लकार' शक्ति का द्योतक है। शिव एवं शक्ति के लयपूर्ण गति से विश्व एवं तालों की सृष्टि हुई है।"[2]

संगीतसार के अनुसार - "तकार' शिव तथा 'लकार' गिरिजा अर्थात शक्ति दोनों के शिवशक्त्यात्मक संयोग से 'ताल ' शब्द की निष्पत्ति हुई है, अथवा 'तल्' धातु से घञ् (अ) प्रत्यय लगाने से 'ताल' बना है, अर्थात त, ल् दोनों के संयोग से।'[3]

संगीत रत्नाकार के अनुसार-

तालस्तल प्रतिष्ठयामिति धातोर्धञि स्मृतः।
गीतं वाद्यं तथा नृत्तं यतस्ताले प्रतिष्ठितम्।
कालो लध्वादिमितया क्रियया सम्मितो मितिम्।

अर्थात प्रतिष्ठार्थक 'तल्' धातु के पश्चात् अधिकारणार्थक 'धञ्' प्रत्यय लगाने से 'ताल' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। ताल के अन्तर्गत गीत, वाद्य तथा नृत्य प्रतिष्ठित होते हैं। लघु, गुरू तथा प्लुत से युक्त सशब्द एवं निःशब्द क्रिया द्वारा गीत, लय एवं नृत्य को परिमित करने वाला काल ही ताल कहलाता है।"[4]

यहां गीत, वाद्य एवं नृत्य को प्रतिष्ठित करने का अर्थ व्यवस्थित करना, आधार देना तथा स्थिरता प्रदान करना है। भरत मुनि ने अपने ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' के 31वें अध्याय में निःशब्द तथा सशब्द तालों का उल्लेख किया है। भरतमुनि ने संगीत में काल को मापने के साधन को ताल की संज्ञा प्रदान की है। अतः तालों की उपस्थिति का प्रमाण अनादि काल से प्राप्त है। रामायण तथा महाभारत में लय साम्य हेतु हाथ द्वारा ताली देने की प्रथा के प्रचलन से सम्बद्ध उल्लेख प्राप्त होता है।

डॉ0 नागेश्वर लाल कर्ण के अनुसार- "ताल द्वारा संगीत सुख उत्पन्न करता है। जिस प्रकार कर्णधार न हो तो नौका बह जाती है। उसी प्रकार ताल के बिना संगीत कुमार्ग पर चला जाता है।"[5]

अतः तालोत्पत्ति के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों के मत प्राप्त होते हैं, परन्तु व्यापक अर्थ में काल सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त एक अदृश्य, अनन्त, असीम तथा गतिमान आयाम है। काल की गति सदैव अग्रगामी अर्थात आगे को चलने वाली रहती है और इसी गति से मनुष्य को काल और उसके व्यावर्तन का ज्ञान होता है। काल के व्यतीत होने की यही अनुभूति संगीत में ताल सृजन का प्रमुख कारण है। गायन, वादन तथा नृत्य की शोभा ताल से ही है। ताल वाद्यों द्वारा जब गायन तथा वादन के समय को मापा जाता है तो एक अद्भुत आनन्द की सृष्टि होती है। अतः ताल संगीत का प्राण है जिस पर संगीत कला की भव्य ईमारत खड़ी है।

लोक ताल का उद्भव एवं विकास:-

लोक परम्पराओं से सम्पृक्त सभी ताल लोक ताल हैं। लोक गीतों, लोक नृत्यों तथा लोक नाट्यों के उद्भव एवं विकास के साथ-साथ जब लोक वाद्यों का उद्भव एवं प्रचलन हुआ होगा तो वादनस्वरूप जो कुछ भी गीत या नृत्य की संगति हेतु लोक वाद्यों पर बजाया गया होगा, उसे 'लोक ताल' कहा जा सकता है। अतः यह स्पष्टतः दृष्टिगोचर है कि लोकताल का उद्भव एवं विकास भी लोकगीतों, नृत्यों तथा लोकवाद्यों के साथ ही हुआ है। लोक संगीत के अन्तर्गत गीत

तथा नृत्य की संगति हेतु वाद्य वादन का एक व्यवस्थित एवं प्रतिष्ठिति क्रमबद्ध वादन 'ताल' अर्थात 'लोक ताल' के रूप में अवतरित एवं विकसित होकर आज भी प्रचलित है।

हिमाचली लोक संगीत में भी लोक गीतों, लोक नृत्यों तथा लोक नाट्यों की संगति हेतु लोकवाद्यों पर विभिन्न तालों का व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। हिमाचली लोकतालों के उद्भव एवं विकास का श्रेय यहां के मंगलामुखियों तथा व्यवसायिक जाति के लोगों को जाता है, जिन्हें विभिन्न जनपदों में ढाकी, तूरी, बाजगी, बेड़े, बजन्तरी, हेसी आदि कहा जाता है। लोक गीत के माध्यम से जन-मानस के उद्गारों का स्पर्श जब लोक वाद्यों पर बजाई जाने वाली लोक तालों से होता है, तो वह अद्भुत सौन्दर्य से सम्पृक्त होकर स्वार्गिक आनन्द की सृष्टि करते हैं। हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जनपदों में प्रचलित लोकतालों में विविधता देखने को मिलती है।

लोक ताल हिमाचली जन-मानस की हर धड़कन से सम्पृक्त है। यहां सुबह से शाम तथा जन्म से मृत्यु तक के समस्त क्रिया कलापों में लोक तालों का व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। हिमाचली लोक तालों के नामकरण में विविधता होते हुए भी कुछ तालों को बजाने की विधाओं में समानता देखने को मिलती है। समस्त क्षेत्रों की अपनी विधा और नामों से लोक संगीत के अन्तर्गत लोक तालों का प्रचलन दृष्टव्य है। निःसन्देह कुछ क्षेत्रों में लोक तालों का मूल स्वरूप लुप्त हो रहा है, जिसका संरक्षण एवं उन्नयन अनिवार्य है।

लोक ताल शब्दावली:-

हिमाचली लोक ताल सम्बन्धी शब्दावली के अन्तर्गत हिमाचली लोक संगीत में प्रयुक्त लोक तालों का विवरण प्रस्तुत है –

लोक ताल	मात्रा	लोक ताल	मात्रा
अन्द्रेडा ताल	14 मात्रिक	जड़ेत ताल	8 मात्रिक
आरती ताल	12 मात्रिक	जागरा ताल	6 मात्रिक
कहरवा ताल	8 मात्रिक	जिणिया ताल	7मात्रिक
करियाला ताल	14 मात्रिक	झपताल	10 मात्रिक
कलुआ ताल	10 मात्रिक	झिंझोटी ताल	14 मात्रिक
खणाई ताल	16 मात्रिक	टाम्बा ताल	8 मात्रिक
खेमटा ताल	6 मात्रिक	ठोडा ताल	8 मात्रिक
गड़ाई ताल	16 मात्रिक	डंडारस ताल	12 मात्रिक
गीह/मुजरा ताल	16 मात्रिक	डुडगुडु ताल	8 मात्रिक
गुग्गा ताल	16 मात्रिक	त्रिताला	8 मात्रिक
ग्रोकचक्रोगमिंग	4 मात्रिक	दादरा ताल	6 मात्रिक
चघोड़ ताल	12 मात्रिक	दीपचन्दी/चाचर	14 मात्रिक
चालंत ताल	8 मात्रिक	दुदकादो ताल	7 मात्रिक
चैत्री ताल	7 मात्रिक	देवपूजा ताल	8 मात्रिक
चौघड़ी ताल	12 मात्रिक	धमार ताल	14 मात्रिक
छिंज ताल	12 मात्रिक	धवेरणी ताल	8 मात्रिक
छत्तर ताल	--	नट ताल	10 मात्रिक
छोड़का ताल	16 मात्रिक	नाटी ताल	16, 12 मात्रिक
जंग ताल	16 मात्रिक	नौबत/नौपद ताल	12 मात्रिक

पहाड़ी दादरा ताल	12 मात्रिक	पजावज ताल	8 मात्रिक
पाची ताल	28 मात्रिक	मिलणी ताल	10 मात्रिक
पियाई ताल	16 मात्रिक	रासा ताल	12 मात्रिक
फुलणु ताल	4 मात्रिक	रूपक ताल	7 मात्रिक
बधाई ताल	28 मात्रिक	लावां ताल	7 मात्रिक
बड़हंस ताल	6 मात्रिक	वारा ताल	8 मात्रिक
बुढु ताल	16 मात्रिक	शवारी ताल	7 मात्रिक
बेल ताल	16 मात्रिक	स्वांगटी गीह् ताल	12 मात्रिक
बेउल ताल	14 मात्रिक	संधिवा ताल	8 मात्रिक
बैई ताल	16 मात्रिक	सूरजन्हाण ताल	7 मात्रिक
बेलाराणम ताल	8 मात्रिक	सोअर ताल	16 मात्रिक
मकलावा ताल	13 मात्रिक	सोरेनिसांग ताल	8 मात्रिक
मण्डुआ ताल	13 मात्रिक	हवन ताल	8 मात्रिक
मरेठा ताल	9 मात्रिक	हरण ताल	6 मात्रिक
मरण ताल	28 मात्रिक	हवारा ताल	4 मात्रिक

अन्द्रेड़ा ताल-

हिमाचल प्रदेश के सोलन जनपद में विवाहोत्सव पर बधू के गृह प्रवेश को स्थानीय बोली में 'अन्द्रेड़ा' कहा जाता है। उस समय तूरी या बाजगी अर्थात लोक वादकों द्वारा ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर 'अन्द्रेड़ा ताल' को बजाया जाता है। सोलन जनपद में बजाई जाने वाली चौदह मात्रिक 'अन्द्रेड़ा ताल' प्रस्तुत है।

(विभाग - 7)

बोल-

1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12	13 14
झां तिरकिड़	झां तिरकिड़	झांऽता ऽकिध	ताऽ तिरकिड़	झांऽ तिरकड़	ताऽता ऽकिधा	तांऽ तिरकिड़
x	2	3	0	4	5	0

सिरमौर जनपद में विवाहोत्सव पर 'घरासणी' अर्थात वधू प्रवेश के समय बजाई जाने वाली 4 मात्रिक अन्द्रेड़ा ताल निम्न प्रकार से है। सिरमौर जनपद में अन्द्रेड़ा ताल प्रायः मध्य लय में बजाई जाती है। यह ताल कहरवा ताल के समान बजती प्रतीत होती है। अन्द्रेड़ा ताल के बोल इस प्रकार से हैं-

बोल-

1	2	3	4
घिणंधाधिं	नातिरकिट	तिण धाधिं	नातिरकिट
X		0	

अन्य प्रकार-

बोल-

1	2	3	4
झिणंझांजा	नातिरकिट	तिण धाधिं	नातिरकिट
X		0	

आरती ताल-

आरती ताल को देवपूजा का ताल माना गया है। 'नौपद' या 'नौबत' का प्रारम्भ प्रायः इसी लोक ताल से ही किया जाता है आरती ताल की चाल अथवा लय अद्भुत सी प्रतीत होती है, जिससे ताल का समय ज्ञात करना कठिन हो जाता है। आरती ताल शास्त्रीय ताल 'एकताल' के समतुल्य 12 मात्रिक लोक ताल है। आरती में बारह मात्राएं, 4 ताली तथा 4 विभाग हैं। इस लोक ताल में खाली का स्थान नहीं है। आरती ताल के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	ता	धिन	धा	ता	कड़कड़	तां	तड़ा	धिन	धा	ता	कड़कड़
x			2				3			4	

कहरवा ताल-

हिमाचली लोकसंगीत में लोकगीतों, लोक नृत्यों के साथ 'कहरवा ताल' का व्यवहार क्षेत्र विशेष में विविध प्रकार से किया जाता है। यहां प्रचलित गिद्धा तथा पढुवा नृत्य गीतों में कहरवा ताल का प्रयोग मुख्यतः दृष्टिगोचर होता है। यह ताल प्रायः ढोलक वाद्य पर बजाई जाती है। कुशल वादक नगाड़ा वाद्य पर भी उक्त ताल का प्रदर्शन करते हैं। 8 मात्रिक 'कहरवा' लोक ताल के बोल इस प्रकार से हैं-

(मात्रा - 8, विभाग - 2)

1	2	3	4	5	6	7	8
धि	ण	ना	ती	धि	ण	झां	णा
x				0			

अन्य प्रकार-

1	2	3	4	5	6	7	8
धागे	नक	नक	धिं	धा	ऽक	नक	धिं
x				0			

करियाला ताल-

हिमाचल का सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रतिनिधि लोकनाट्य करियाला के साथ 'करियाला ताल' को बजाया जाता है। करियाला लोकनाट्य के आरम्भ होने से पूर्व ही मंगलामुखियों द्वारा अखाड़ा पूजन तथा चन्द्रावली के नृत्य के साथ करियाला ताल को बजाया जाता है। चौदह मात्रिक यह लोक ताल शास्त्रीय 'आड़ा चौताल' के साम्य है। करियाला ताल के बोल निम्न प्रकार से हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8
तांऽनिण	तांऽनिण	घीऽकड़	धींऽझा	तिरकिटझां	धिऽऽता	झांऽतिरकिड़	झांऽघिना
x		2		0		3	

9	10	11	12	13	14
झांतिरकिड़	झांऽना	नणझांऽ	धिंऽना	ताऽधिंऽ	निणकिड़
0		4		5	

उक्त करियाला ताल ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर बिलंबित लय में बजाई जाती है। करियाला लोकनाट्य में बजाई जाने वाली 'कहरवा ताल' के समतुल्य 8 मात्रिक करियाला ताल जिसमें चार ताली बजती है, के बोल इस प्रकार से हैं –

1	2	3	4	5	6	7	8
धीकी	नाना	धीकी	नाना	धीकी	नाना	धीना	गिना
x		2		3		4	

प्रस्तुत 8 मात्रिक लोकताल को करियाला लोकनाट्य में प्रयुक्त लोक गीतों के साथ बजाने का प्रचलन देखने को मिलता है।

कलुआ ताल-

हिमाचल प्रदेश के मण्डी तथा कुल्लू जनपदों 'कलुआ' नामक लोक ताल देवी-देवता की पूजा के समय बजाया जाता है। ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर बजाई जाने वाली दस मात्रिक 'कलुआ ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	
झांणाघिण	झांणाघिण	घिणघिण	झांणाघिण	झांणाघिण	
6	7	8	9	10	1
घिणघिण	झांणाघिण	झांणाघिण	घिणघिण	झांणाघिण	झां

खणाई ताल-

हिमाचल प्रदेश के शिमला, सोलन तथा सिरमौर जनपदों में खेत की खुदाई (जिसे स्थानीय बोली में खणाई कहा जाता है) का कार्य करते समय 'खणाई' नामक लोकताल को प्रायः ढोल, नगाड़ा, दमामटू आदि वाद्यों पर बजाया जाता है। इस लोक ताल में कार्य करने वाले व्यक्तियों में जोश भरने के लिए विभिन्न लयकारियों का प्रदर्शन किया जाता है। लय दिखाने के के लिए ढोल वाद्य पर लगातार 'घिण तिता घिण तिता घिण तिता घिण तिता' बोलों को बजाया जाता है। तीनताल के समरूप सोलह मात्रिक 'खणाई ताल' प्रस्तुत है-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धान	ताड़े	तान	ताड़े	धान	ताड़े	गिदि	नाड़े	झांऽ	णंझां	ऽण	तागे	झांऽ	णंझां	ऽण	तांऽ
x				2				3				4			

खेमटा ताल-

हिमाचली लोक संगीत के अन्तर्गत विभिन्न लोकगीतों में 6 मात्रिक 'खेमटा ताल' का व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। मुख्यतः नृत्य प्रधान गीतों, लुड्डी नृत्य, गिद्धा नृत्य आदि में खेमटा ताल का प्रयोग किया जाता है। 'खेमटा ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6
धिं	धिं	ना	तक	धिं	ना
x			0		

अन्य प्रकार -

1	2	3	4	5	6
धिकड़	धिना	गिना	तिकड़	तिना	गिना
x			0		

गड़ाई ताल-

शिमला, सिरमौर तथा सोलन जनपदों में मक्की की गुड़ाई करते समय यह लोक ताल बजाया जाता है। गड़ाई ताल मुख्यतः दो ढोल तथा नगाड़ा वाद्य पर बजाई जाती है। लोकवादक एक ढोल पर 'जंग ताल' के समरूप आधार ताल का वादन करते हैं, जिसे 'थल' कहा जाता है और दूसरे ढोल पर उसके प्रकार बजाए जाते हैं, जिन्हें 'शुमार' कहा जाता है। अतः गड़ाई ताल के दो प्रकार प्रस्तुत हैं-

थल-

गुड़ाई करते समय सर्वप्रथम पेशकार की तरह थल बजाया जाता है। थल के बोल प्रस्तुत हैं -

'झांना घिना झांना घिना झांना घिना झांना घिना'।

शुमार - जिस प्रकार तबले पर कायदे-पल्टे बजाए जाते है, उसी प्रकार गड़ाई में 'शुमार' बजाया जाता है। शुमार के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8
तां	तां	तां	ताघेना	घिणता	धिंझण	ताऽधिं	झांऽण
x				2			

9	10	11	12	13	14	15	16
झांऽता	ऽतांऽ	ताऽधिं	नाऽण	घिंणता	घिंझण	ताऽधिं	झांऽण
0				3			

गीह/मुजरा ताल-

सिरमौर जनपद में प्रचलित 'गीह' व 'मुजरा' नृत्य के साथ बजाई जाने वाली यह लोक ताल सर्वाधिक लोकप्रिय है। इस ताल का नामकरण उक्त नृत्य शैली के आधार पर ही हुआ है। यह लोक ताल ढोलक तथा खंजरी वाद्यों पर बजाई जाती है। लोकवादक ढोलक वाद्य के बाएं पुड़े पर एक विशेष प्रकार की 'घूर' (मध्यमा ऊंगली से विशेष ध्वनि उत्पन्न करना) अर्थात ध्वनि के साथ 'गीह या मुजरा ताल' का वादन अत्यन्त सहजता से करते हैं। 16 मात्रिक 'गीह ताल' को ताली के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है –

प्रथम प्रकार- **(मात्रा - 16, विभाग - 4)**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धि	कड़	धिं	ना	धिं	धिं	ना	किड़	धिं	धिं	ना	किड़	धिं	ना	घिड़	घिड़
x				2				0				3			

द्वितीय प्रकार (मात्रा - 16, विभाग - 5, ताली - 5)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
घिड़	घिड़	धिं	ना	धिं	धिं	ना	घिड़	धिं	धिं	ना	घिड़	धिं	ना	घिड़	घिड़
x			2			3				4		5			

'गीह या मुजरा ताल' में पहली, चौथी, सातवीं, ग्यारहवीं तथा तेरहवीं मात्राओं पर तालियों का सुन्दर प्रयोग देखने को मिलता है।

गुग्गा ताल-

'गुग्गा ताल' मुख्यतः गुग्गा जाहर वीर की लोकगाथा के साथ ही व्यवहारित होती है। यह ताल डमरू वाद्य पर लकड़ी की छड़ी के साथ बजाया जाता है। गुग्गा ताल को बिलम्बित तथा द्रुत लय दो प्रकार से बजाया जाता है। गुग्गा ताल प्रस्तुत है -

बिलम्बित लय- **(मात्रा - 16, विभाग - 4)**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
डं	ऽ	टां	ऊं	डां	ऊं	ऊं	ऊं	डं	ऽ	ना	ऊं	ऊं	ऊं	ऽ	टन
x				2				3				4			

द्रुत लय- (विभाग - 4)

1	2	3	4
डनटाऊं	डांऊ-टं	डनटाऊं	डांऊं ऽऽ

ग्रोकचक्रोगमिंग-

किन्नौर जनपद में यह लोक ताल देव नृत्य के अवसर पर बजाया जाता है। जब देवता के माली अर्थात पुजारी में देवता प्रवेश करता है, अर्थात जब देवता के माली को खेल आती है, तो उस समय बजने वाले ताल को स्थानीय बोली में 'ग्रोकचक्रोगमिंग' कहा जाता है। चतुः मात्रिक यह लोक ताल इस प्रकार से है-

1	2	3	4
धिं	ताता	नक	धिन

उक्त ताल में कभी-कभी निम्न बोलों को भी बजाया जाता है। इस ताल में प्रथम 'धिं' पर अन्तिम 'धिं' की अपेक्षा अधिक आघात किया जाता है-

1	2	3	4
धिं	नक	नक	धिं

चघोड़ ताल-

शिमला जनपद में प्रचलित 'चघोड़ ताल' का एक प्रकार माना जाता है। 12 मात्रिक यह लोक देव मन्दिरों में ढोल, नगाड़ा तथा दमामा वाद्यों पर बजाया जाता है। चघोड़ ताल के बोल निम्न प्रकार से है-

(मात्रा - 12, विभाग - 4)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	गिड़	गिड़	धा	गिड़	गिड़	धा	गिड़	गिड़	धांऽ	गिना	धाऽ
x			2			3			4		

चालंत ताल-

शिमला क्षेत्र में देवालयों में बजाया जाने वाला यह देव ताल भी चौघड़ी ताल का एक प्रकार माना जाता है। ढोल, नगाड़ा, दमामा आदि लोक वाद्यों पर बजाया जाने वाल 8 मात्रिक 'चालंत ताल' प्रस्तुत है-

(मात्रा - 8, विभाग - 4)

1	2	3	4	5	6	7	8
घिड़	घिड़	घिड़	घिड़	घिड़	घिड़	धिंऽ	नाऽ

चैत्री ताल-

हिमाचल प्रदेश के शिमला तथा सोलन जनपदों में चैत्र मास में मंगलामुखी लोग 'बिरत' अर्थात ईलाके में 'महीना' गीत गाते समय संगति हेतु 'चैत्री ताल' को बजाया जाता है। 'चैत्री ताल' 7 मात्रिक 'रूपक ताल' के सदृश्य प्रतीत होता है। इस लोक ताल को 'महीना ताल' भी कहा जाता है। 7 मात्रिक 'चैत्री ताल' प्रस्तुत है-

(मात्रा - 7, विभाग - 2)

1	2	3	4	5	6	7
तांऽना	ऽणता	तिरकिड़	घिण	झांझा	घिण	झांझा
x			2			

चौघड़ी ताल-

हिमाचल प्रदेश के शिमला तथा सिरमौर क्षेत्रों में प्रातः कालीन बेला में देवालय में ढोल, नगाड़ा तथा दमामा वाद्यों पर 'चौघड़ी ताल' को बजाने की प्राचीन परम्परा आज भी दृष्टव्य है। चौघड़ी अर्थात 4 घड़ी का भाव यहां परिलक्षित होता है। स्थानीय लोक देव मन्दिर के इस सन्देश को अपने दैनिक जीवन को सुचारू रूप से प्रारम्भ करने का मंगलमय आर्शीवाद मानते हैं। 12 मात्रिक 'चौघड़ी ताल' में प्रायः द्रुतलय में ताल का चलन 'दादरा ताल' की दुगुन के समतुल्य प्रतीत होता है। 'चौघड़ी' ताल के बोल निम्न प्रकार से हैं-

(मात्रा - 12, विभाग -4)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
झिनर	गिण	गिण	झिण	गिणा	ऽट	झिण	गिण	गिण	झिण	गिणा	ऽट
x			0			x			0		

छत्तर ताल-

शिमला जनपद में किसी व्यक्ति की मृत्यु पर यह लोक ताल बजाया जाता है। इस लोक ताल के अन्तर्गत ढलदा छत्तर, चोढ़दा छत्तर, रामकड़ी तथा जलैरू आदि तालों को बजाने की परम्परा है।

छिंज ताल-

हिमाचल प्रदेश में मेलों तथा त्यौहारों के अवसरों पर 'छिंज' का आयोजन देखने को मिलता है। 'छिंज' शब्द से अभिप्राय लड़ाई या कुश्ती से लिया जाता है। कुश्ती का आरम्भ मंगलामुखियों द्वारा ढोल बजाकर किया जाता है और यह ढोल वादन अन्त तक चलता रहता है। ढोलक वादक पहलवानों को जोश दिलाने के लिए ढोल वाद्य पर विविध प्रकार की लयकारियों का प्रदर्शन करके अपनी वादन कुशलता का परिचय देते हैं। कुश्ती के आरम्भ में ढोल तथा टमक वाद्य पर 8 मात्रिक निम्न ताल को बजाया जाता है-

1	2	3	4	5	6	7	8
धिन	नाझां	धिन	नाझां	धिन	नाझां	धिन	नाझां
x		2		x		2	

कुश्ती आरम्भ हो जाने पर ढोल वाद्य पर 12 मात्रिक 'छिंज ताल' को बजाया जाता है, जिसकी लय 'दादरा ताल' के समान प्रतीत होती है। छिंज ताल प्रस्तुत है-

(मात्रा - 12, विभाग - 4)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	ना	झां	धिंधिं	ना	तां	धिं	ना	झां	धिंधिं	ना	तां
x			0			2			0		

छोड़का ताल-

शिमला जनपद में लोक रामायण में 'छोड़का गीत' के साथ 'छोड़का' लोक ताल को बजाया जाता है। 16 मात्रिक 'छोड़का ताल' शास्त्रीय 'तीनताल' के समतुल्य प्रतीत होती है परन्तु इनके बोलों तथा विभागों में अन्तर है। ढोल तथा नगाड़ा वाद्य पर बजाई जाने वाली 'छोड़का ताल' निम्न प्रकार से है-

(मात्रा - 16, विभाग -8)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धाधिं	ऽना	धात्र	कऽ	ताधिं	ऽना	धात्र	कऽ	धान	ऽधा	ऽताधिं	ऽना	ताधिं	ऽना	धात्र	कऽ
x		2		3		4		x		2		3		4	

जंग ताल-

हिमाचल प्रदेश के सिरमौर, शिमला तथा सोलन जनपदों में यह लोक ताल मंगलामुखियों द्वारा विवाहोत्सव पर बजाया जाता है। विवाह के शुभ अवसर पर मंगलामुखियों के आगमन, बारात के प्रस्थान तथा दूल्हन को लेकर वापिस दूल्हे के घर पहुँचने पर 'जंग ताल' को बजाने का प्रचलन देखने को मिलता है। विवाहोत्सव में प्रारम्भ से लेकर समापन तक मंगलामुखियों द्वारा ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर विभिन्न लयकारियों के प्रदर्शन अर्थात जंगताल को सुनकर दर्शक मन्त्रमुग्ध हो उठते हैं। लय स्वरूप नगाड़ा वाद्य पर निम्न बोल बजाए जाते हैं-

बोल - घिण तिता, घिण तिता, घिण तिता, घिण तिता

16 मात्रिक 'जंग ताल' बिलम्बित लय में आरम्भ होती है। इस ताल की उठान 4 मात्रिक मुखड़े से आरम्भ होती है।

मुखड़ा - त्रिकड़ धिंना ऽधिं नाऽ-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
झांऽ	ऽतां	धिंऽ	तांऽ	त्रिकड़	धिंना	ऽधि	नाऽ	झांऽ	ऽता	धिंऽ	तांऽ	त्रिकड़	धिंना	ऽधिं	नाऽ
x				0				2				0			

जड़ेत ताल-

हिमाचल के शिमला तथा सिरमौर जनपदों में विवाहोत्सव पर 'जड़ेत ताल' का प्रचलन देखने को मिलता है। बारात प्रस्थान के समय यह लोक ताल बजाया जाता है। पहाड़ी क्षेत्रों में पहले यातायात के साधनों का अभाव था। स्थानीय लोग वर के घर से वधू के घर तक वर को पालकी में बिठाकर ले जाते थे। बारात में सबसे आगे लोक वादकों द्वारा 'जड़ेत ताल' को बजाया जाता था। इसी प्रकार वापस आते समय भी इस लोक ताल को बजाया जाता था। आज भी कुछ दुर्गम क्षेत्रों में इस लोक ताल को बजाने का प्रचलन देखा जा सकता है। नगाड़ा तथा दमानू वाद्य पर बजाई जाने वाली 8 मात्रिक 'जड़ेत ताल' प्रस्तुत है-

(मात्रा-8, विभाग-2)

1	2	3	4	5	6	7	8
धांई	तांई	तांई	तांई	तिर	धांई	धांई	तांई
x				2			

जागरा ताल-

सिरमौर जनपद में मनोकामना पूर्ण होने पर ईष्ट देवता को अपने घर लाया जाता है, जिसे स्थानीय बोली में 'जागरा' कहा जाता है। इस अवसर पर शहनाई की धुन के साथ ढोल, नगाड़ा, दमामटू आदि लोक वाद्यों पर 'जागरा ताल' को बजाया जाता है। 6 मात्रिक 'जागरा ताल' के बोल इस प्रकार से है-

1	2	3	4	5	6
झिण	झांझा	गिना	झिंण	झांझां	तिरकिट
x			2		

उक्त 'जागरा' लोक ताल का चलन द्रुत 'एकताल' के समान प्रतीत होता है।

जिणिया ताल-

सिरमौर जनपद में चैत्र मास में 'डूम' जाति के लोग गांव-गांव जाकर 'जिणिया' नामक व्यक्ति की लोक गाथा को गाते हैं। इस लोक गाथा के साथ ढाकुली वाद्य पर 'जिणिया ताल' को बजाया जाता है। यह लोकताल ढाकुली वाद्य पर बांस की छड़ियों से बजाई जाती है। 7 मात्रिक 'जिणिया ताल' का चलन 'रूपक ताल' के समान प्रतीत होता है। जिणिया ताल के बोल प्रस्तुत है-

1	2	3	4	5	6	7
ढीं	ऊँ	ऊँ	ढीं	ऊँ	ऊँ	ऊँ

झपताल-

झपताल को स्थानीय बोली में 'झपताला' भी कहा जाता है। हिमाचली लोक संगीत में इस ताल का व्यवहार कम देखने को मिलता है। लोकवादकों द्वारा कभी-कभी धार्मिक अवसरों पर वाद्य वृन्द के मध्य 'झपताल' को बजाया जाता है। 'झपताल' के बोल निम्न प्रकार से बजाए जाते हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
झां	ना	झां	झां	ना	तां	तिरकिट	झां	झां	ना
x		2			0		3		

अन्य प्रकार-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धिण	नाक	धिण	धिण	नाक	तिण	नाक	धिण	धिण	नाक
x		2			0		3		

झिंझोटी ताल-

'झिंझोटी ताल' को पारम्परिक लोकगीत 'झिंझोटी' के साथ बजाया जात है। झिंझोटी ताल प्रस्तुत है-

(मात्रा - 14, विभाग - 4)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
झां	झां	त्रिक	झां	झां	झांगे	नाण	तां	तांण	त्रिक	झां	झां	झांगे	नाण
x			2				0			3			

उक्त ताल शास्त्रोक्त 'दीपचन्दी ताल' के समतुल्य है।

टाम्बा ताल-

शिमला जनपद में प्रचलित यह लोकताल देवता के यात्रा पर जाने से पूर्व तैयारी के समय बजाया जाता है। सिरमौरी जनपद में इसे 'टमकरा' कहा जाता है। शहनाई, करनाल तथा रणसिंगा वाद्यों की धुन के साथ ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर 'टाम्बा' लोक ताल को बजाया जाता है। 8 मात्रिक 'टाम्बा ताल' के बोल इस प्रकार से बजाए जाते हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8
झेजे	गेदे	गेदे	गेदे	धिगड़	गेदे	गेदे	धिंनाग
x				0			

अन्य प्रकार-

1	2	3	4
धिंनाना	धिंनाना	धिंनाना	धातिरकिट

उक्त ताल देव-यात्रा का सन्देश सूचक माना जाता है।

ठोडा ताल-

हिमाचल प्रदेश के सिरमौर, शिमला तथा सोलन जनपदों में प्रचलित 'ठोड़ा' लोकनाट्य के आयोजन पर 'ठोड़ा ताल' को बजाया जाता है। इस लोक ताल को 'रथेवला' तथा 'ठडोईर ताल' भी कहा जाता है। यह ताल ढोल, नगारे और दमामटू वाद्यों पर बजाई जाती है। ठोडा ताल की पहली 4 मात्राएं मध्य लय तथा अन्तिम 4 मात्राएं द्रुत लय में बजाई जाती है। 8 मात्रिक 'ठोड़ा ताल' इस प्रकार से है-

(मात्रा-8, विभाग-2)

1	2	3	4	5	6	7	8
ताणिका	ताणिका	ताणिका	तींऽग	धाणिगा	धिंगाणा	धिंगाणा	घींऽग
x				0			

प्रकार-1

1	2	3	4	5	6	7	8
झांऽता	तांऽता	तांऽता	तिरकिड़	तांऽता	तांऽटा	तांऽटा	धिंऽधिं
x				0			

प्रकार-2

1	2	3	4	5	6	7	8
झिंऽता	तिंऽटा	झिंऽता	तिरकिट	तिंऽटा	तिंऽटा	झिंऽता	धिंधिं
x				0			

डंडारस ताल-

चम्बा जनपद में प्रचलित यह प्रसिद्ध लोक ताल 'डंडारस' लोक नृत्य के साथ बजाया जाता है। 12 मात्रिक यह लोक ताल ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर बजाया जाता है। 'डंडारस ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

(मात्रा - 12, विभाग - 4)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
तां	तां	गिड़ता	तां	तां	गिड़न्जा	तां	तां	गिड़न्जा	ताणी	तां	तां
x			2			0			3		

अन्य प्रकार -

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
तां	तां	तां	तां	तांढ़ी	तांढ़ी	ता	तां	तांढ़ी	तां	तां	ताढ़ी
x			2			0			3		

डुगडुग ताल-

चम्बयाली जनपद की चुराह तहसील में प्रचलित 'नट नृत्य' के अन्त में 'डुगडुग ताल' को बजाया जाता है। 8 मात्रिक यह लोक ताल ढोल वाद्य पर बजाया जाता है, जिसके बोल निम्न प्रकार से हैं -

1	2	3	4	5	6	7	8
डाझिं	ताणा	डाझिं	ताणा	डाझिं	ताणा	तिता	ताणा
x				0			

त्रिताला-

शिमला तथा सिरमौर जनपद में प्रचलित इस लोक ताल को शहनाई की धुन के साथ ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर सम्मिलित रूप से बजाया जाता है। इस ताल को त्रिताल व अद्धात्रिताल तथा ठेका भी कहा जाता है। 8 मात्रिक त्रिताला के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8
झिण	झांगि	ऩ्ना	तिरकिट	तिण	धागि	ऩ्ना	तिरकिट

अन्य प्रकार -

1	2	3	4	5	6	7	8
धाक्ड़	धिं	धाधा	तिं	ताक्ड़	धिं	धाधा	कड़कड

शहनाई की धुन के साथ उक्त बोलों को दो बार बजाना होता है अतः 8 मात्राओं को दो आवर्तनों में बजाने के परिणामस्वरूप लोक वादकों ने इस लोक ताल को 16 मात्रिक ताल के समतुल्य मानकर 'त्रिताला' कहा जाता है।

दादरा-

हिमाचली लोक संगीत में प्रचलित लोकगीतों में 'दादरा ताल' का व्यवहार देखने को मिलता है, परन्तु कई लोकगीतों में 6 मात्रिक ताल को दुगना करके 12 मात्राओं में बजाने का प्रचलन देखने को मिलता है। मुख्यतः 'नाटी' गायन के साथ इसका व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। 'दादरा ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	तिं	ना	धा	गि	ना	धा	ति	ना	धा	तिर	किट
x			2			3			0		

दीपचंदी/चाचर ताल-

हिमाचली लोक संगीत के अन्तर्गत हिमाचली लोकगीतों में 'दीपाचन्दी' व 'चाचर ताल' सर्वाधिक प्रचलित लोकताल है जो अपनी लोक विशेषताओं से परिपूर्ण है। इस ताल को 'चाचर' या 'पहाड़ी ताल' के नाम से भी जाना जाता है। हिमाचली लोकनृत्यों में भी 'दीपचन्दी ताल' का व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। यह लोक ताल ढोलक, नगाड़ा आदि लोकवाद्यों पर लोक कलाकारों द्वारा बजाया जाता है। 14 मात्रिक 'दीपचन्दी' व 'चाचर ताल' प्रस्तुत है-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
झांणा	झांणा	णक	झांणा	णक	झांणा	णक	ताणां	ताणां	णक	झांणा	णक	झांणा	णक
x			2				3			4			

दुदकादो ताल-

शिमला जनपद में प्रचलित 'दुदकादो' नामक यह लोकताल कृष्ण लीला से सम्बद्ध ताल माना गया है, जिस प्रकार शास्त्रों में कृष्ण लीला का वर्णन दूध तथा दही की होली खेलना बताया गया है उसी प्रकार इस त्यौहार को पहाड़ी क्षेत्रों के राज-दरबारों, भूतपूर्व रियासतों धामी, अर्की आदि में दूध तथा दही की होली खेलना के नाम से मनाया जाता था परन्तु आज यह परम्परा लगभग समाप्त हो गई है। इस त्यौहार के आयोजन पर यह लोकताल ढोलक वाद्य पर बजाया जाता था। 7 मात्रिक 'दुदकादो ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

(मात्रा-7, विभाग - 2)

1	2	3	4	5	6	7
धिं	ऽ	ऽ	धिं	ऽ	ऽ	क
x			2			

देवपूजा ताल-

शिमला, सोलन तथा सिरमौर जनपदों में देवता के मन्दिरों में पुजारी द्वारा देवता की पूजा करते समय मंगलामुखियों द्वारा नगाड़ा तथा दमामू वाद्यों पर यह लोक ताल बजाया जाता है। 8 मात्रिक 'देव-पूजा ताल' के बोल निम्न प्रकार से हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8
झांऽण	तांऽतां	ऽतिरकिट	तांऽतां	धिनण	त्रकझां	तिकड़	झांऽता
x				0			

धमार ताल-

हिमाचली लोक संगीत में 'धमार ताल' का व्यवहार भी दृष्टिगोचर होता है। मंगलामुखी लोग कई बार इस ताल को 'नौबत' करते समय 'बधाई ताल' के पश्चात् बजाते हैं। शास्त्रोक्त 'धमार ताल' के समतुल्य लोक वादकों द्वारा 'धमार ताल' को बजाया जाता है। यह ताल दमामटू तथा नगाड़ा वाद्यों पर बजाई जाती है। चौदह मात्रिक 'धमार ताल' के बोल इस प्रकार हैं-

(मात्रा-14, विभाग-4)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
झां	तिरकिड़	झां	तिरकिड़	तां	झां	तिरकिड़	ताना	णिझां	गिना	त्रक	तां	तिरकिड़	तां
x			2				0			3			

धरेवणी ताल-

हिमाचल के शिमला, सोलन तथा सिरमौर जनपदों में 'धरेवणी' नामक लोक ताल का प्रचलन मुख्यतः देव कार्यों में देखने को मिलता है। इस लोक ताल अथवा देवताल को 'गरनी ताल' भी कहा जाता है। देवता के 'गुर' जिसे स्थानीय बोली में 'दिंवा' या 'ग्रहणीता' कहा जाता है, के हिंघरने अर्थात देव शक्ति के प्राकट्य के समय ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर 'धरेवणी ताल' को बजाया जाता है। 8 मात्रिक 'धरेवणी ताल' के बोल प्रस्तुत है -

(मात्रिक - 8, विभाग -2)

1	2	3	4	5	6	7	8
झां	तां	तां	धड़ा	झां	ना	घेघे	नाना
x				2			

अन्य प्रकार -

1	2	3	4
घिणणजा	धिना	घिणणजा	घिड़ान

4 मात्रिक लय में 'धरेवणी ताल' का यह प्रकार द्रुत लय में बजाया जाता है।

नट ताल-

चम्बयाली जनपद में प्रचलित यह लोक ताल 'नट नृत्य' के साथ बजाया जाता है। दस मात्रिक 'नट ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

(मात्रा - 10, विभाग - 3)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
गड़हजां	गड़जां	गड़हजां	गड़जां	गड़हजां	गड़जां	तां	तां	तां	तां
x				2			3		

अन्य प्रकार -

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
गड़हजां	तां	तां	गड़जां	ताणी	गड़जां	तां	तां	गड़जां	ताणी
x				2			3		

नाटी ताल-

हिमाचली लोक संगीत की सर्वाधिक लोक प्रिय गीत एवं नृत्य शैली 'नाटी' के साथ 'नाटी ताल' का व्यवहार देखने को मिलता है। 'नाटी ताल' के दो प्रकार दृष्टव्य है।

प्रथम प्रकार-

नाटी ताल के इस प्रकार में 16 मात्राओं का व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। बिलम्बित लय में बजाई जाने वाली यह लोक ताल शास्त्रोक्त 'तीन ताल' के समान प्रतीत होती है। इस लोक ताल को 'पहाड़ी तीनताल' भी कहा जाता है। बजन्तरी, बाजगी, ढाकी व तूरी लोग सामान्यतः 16 मात्रिक 'नाटी ताल' के बोल निम्न प्रकार से बजाते हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
झांऽ	नांऽ	निण	झांगे	तांऽ	निण	तांऽ	त्रक	तांऽ	तांतां	तांऽ	त्रक	झांऽ	घिना	झांऽ	त्रक
x				2				3				4			

द्वितीय प्रकार-

'नाटी ताल' के द्वितीय प्रकार में 12 मात्राओं को बिलम्बित लय में बजाया जाता है। नाटी ताल के इस प्रकार की चाल 'दादरा ताल' के समतुल्य प्रतीत होती है। यह लोक ताल ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर बजाई जाती है। 12 मात्रिक 'नाटी ताल' के बोल प्रस्तुत है-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	ता	ता	धिं	ता	त्रक	धिं	ता	ता	धिं	तिर	किट
x			2			3			4		

अन्य प्रकार -

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	तिं	ना	धिं	ना	त्रक	धिं	ना	त्रक	धिं	तिर	किड़
x			2			3			4		

नौबत/नौपद ताल-

सिरमौर, शिमला तथा सोलन जनपदों में प्रचलित यह लोक ताल 'देव ताल' तथा 'संस्कार ताल' भी माना जाता है। यह मंगल ताल विभिन्न शुभ अवसरों पर मंगलामुखियों द्वारा ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर बजाया जाता है। शहनाई की धुन पर लोक वादक विभिन्न लयकारियों, बांट, परन आदि का प्रदर्शन अत्यन्त कुशलता के साथ करते हैं। 'नौबत' या 'नौपद ताल' शास्त्रीय 'एकताल' के समान प्रतीत होता है। 12 मात्रिक 'नौबत ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

(मात्रा-12, विभाग-4)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	तिरकिड़	धा	धा	तां	तां	तां	तिरकिड़	धा	तां	धा	तां
x			2			3			4		

पजावज ताल-

सिरमौर तथा शिमला जनपद में प्रचलित यह लोक ताल देव-यात्रा, जिसे स्थानीय बोली में 'जातर' कहा जाता है, के समय ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर बजाया जाता है। इस लोक ताल को 'पजावज' या 'देवकारिया बाजा' भी कहा जाता है। जब देव-यात्रा ऊबड़-खाबड़ रास्ते से गुजर रही होती है तो 'पजावज ताल' को बजाया जाता है।

पहाड़ी दादरा ताल-

शिमला, सिरमौर तथा सोलन क्षेत्रों में प्रचलित नाटी नृत्य-गीतों के साथ यह लोक ताल बजाया जाता है। ढोलक वाद्य पर बजाया जाने वाला बारह मात्रिक पहाड़ी दादरा ताल के बोल प्रस्तुत है। यह ताल दो प्रकार से बजाई जाती है।

पहला प्रकार - **(मात्रा - 12, विभाग - 6)**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
झां	तिरकिड़	झां	तां	तां	तां	तां	तिरकिड़	झां	त्रक	धिंना	तिरकिड़
x		2		0		3		4		5	

दूसरा प्रकार - **(मात्रा - 12, विभाग - 4)**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
झांऽ	निण	झांगे	तांऽ	ऽऽ	त्रक	झांऽ	तांऽ	तांऽ	तांऽ	झांऽ	झांऽ
x			0			2			0		

पाची ताल-

देवालय में प्रातः देव-पूजा के समय यह लोक ताल, लोक वादकों द्वारा नगाड़ा तथा दमामू वाद्य पर बजाया जाता है, इसे 'पाचे ताल' भी कहा जाता है। 'पाची ताल' देव-पूजा के प्रारम्भ में बजाया जाता है। 28 मात्राओं से युक्त 'पाची ताल ' के बोल प्रस्तुत हैं -

बोल -

झांऽ झांऽ घिण घिण झांऽ, झांऽ घिण गिण झानर गढ़झां गिना झानर गढ़झां गिना,
तांऽ तांऽ तिण गिण तांऽ तांऽ तिण गिण झानर गढ़झां गिना झानर गढ़झां गिना, झांऽ
x

पियाई ताल-

शिमला जनपद में प्रचलित यह लोक ताल जन्म-संस्कार पर बजाया जाता है। शिशु के जन्मोपरान्त जब शुद्धि हेतु हवन किया जाता है तो लोक वादक द्वारा नगाड़ा वाद्य पर यह लोक ताल बजाया जाता है। शास्त्रीय 'अद्धा ताल' के समरूप सोलह मात्रिक 'पियाई ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

(मात्रा - 16, विभाग - 4)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धिन	णझां	ऽण	झांऽ	धिन	णझां	ऽण	झांऽ	धिन	णतां	ऽण	तांऽ	ऽऽ	कड़ता	ऽण	तां
x				2				3				0			

फुलणू ताल-

'फुलणू ताल' को 'फुलणिया ताल' भी कहा जाता है। शिमला, सोलन तथा सिरमौर जनपदों में यह लोक ताल खेतों की गुड़ाई तथा सामूहिकक कार्यों में ग्रामीण लोगों का जोश तथा उत्साह बढ़ाने के लिए नगाड़ा तथा दमामटू वाद्यों पर बजाई जाती है। चतुः मात्रिक यह लोक ताल अति द्रुतलय में बजाई जाती है। 'फुलणू ताल' के बोल प्रस्तुत है-

प्रथम प्रकार-

बोल-

1	2	3	4
धिंगा	धिंगा	धींग	धींग

द्वितीय प्रकार-

बोल-

1	2	3	4
धाणिगा	धाणिगा	धींग	धींग

बधाई ताल-

यह लोक ताल शिशु जन्मोत्सव, विवाह संस्कार तथा किसी विशेष अवसरों पर मंगलामुखियों द्वारा नगाड़ा तथा दमामटू वाद्यों पर बजाई जाती है। शास्त्रोक्त 'ब्रह्मताल' के समरूप 28 मात्रिक 'बधाई ताल' में निम्न प्रकार बोल बजाए जाते हैं-

बोल-

1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12	13 14
झांना णिझां	णिझां तांणी	नाता तिरकिड़	तांऽ तिरकिड़	नातां णितां	णिना तांणि	णिऽना तिरकिड़
X	2	0	3	0	4	5

15 16	17 18	19 20	21 22	23 24	25 26	27 28
नातां णिना	णितां तांऽणि	णिऽना तिरकिड़	तांऽनण तांऽनण	नाऽतिर किड़झां	नाऽणी नाऽतिर	किड़झां नाऽणि
6	0	7	9	9	10	0

अन्य प्रकार-

बोल-

1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12	13 14
तांऽ तिंण	तिंण तिंण	तिंण तिंण	तिंण तिंण	झिंण झिंण	झिंण झिंण	झिंण झिंण
X	2	0	3	0	4	5

15 16	17 18	19 20	21 22	23 24	25 26	27 28
झिंण झिंण	तिणक झांऽ	कड़ान तांऽ	तिरकिट तिणक	झांऽ कड़ान	तांऽ तिरकिट	झिणगिण तांऽ
6	0	7	9	9	10	0

बड़हंस ताल-

यह लोक ताल मृत्यु संस्कार के समय बजाई जाती है। 6 मात्रिक 'बड़हंस ताल' नगाड़ा तथा दमामू वाद्य पर लम्बे न्यास के साथ बजाया जाता है। इसमें तीन-तीन मात्राओं के दो विभाग है। 'बड़हंस ताल' के बोल प्रस्तुत है-

1 2 3	4 5 6
घिण तां तां	ऽ ऽ ऽ
x	0

बुढ़ु ताल-

सिरमौर जनपद में प्रचलित 'बुढ़ु नृत्य' के साथ 'हारों तथा हारूलों' को गाते समय 'बुढ़ु ताल' को बजाया जाता है। लोक वादक हुड़क वाद्य पर इस लोक ताल को बिलंबित लय में बजाते हैं। 16 मात्रिक 'बुढ़ु ताल' के बोल निम्न प्रकार से हैं-

1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
झां ऊँ ऽ झां	झां ऊँ ऽ झां	झां ऊँ ऽ झां	झां ऊँ झां ऊँ
x	2	3	4

बेल ताल-

यह लोक ताल भी देवता की यात्रा के समय बजाया जाता है। 16 मात्रिक 'बेल ताल' चाम्बी ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर बजाया जाता है। 'बेल ताल' के बोल प्रस्तुत है -

(मात्रा - 16, विभाग - 5)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धिंना	त्रक	धिंना	धिंना	धिंना	त्रक	धिंना	धिंना	धिंना	त्रक	धिंना	धिंना	धिंना	नाना	धिंना	नाना
x				2				3				4			

बेउल ताल-

'बेउल ताल' को देव ताल तथा संस्कार ताल भी माना जाता है। यह लोक ताल विशेषकर पुत्र जन्म के समय मंगलामुखियों द्वारा बजाया जाता है। देवताल के अन्तर्गत 'बेउल ताल' प्रातः चौघड़ी के समय देवालय में बजाए जाने की परम्परा दृष्टव्य है। 14 मात्रिक 'बेउल ताल' के बोल इस प्रकार हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
धिं	नर	गड़	धिं	ऽ	ना	ऽ	धिं	नर	गड़	धिं	ऽ	ना	ऽ
x			2				3			4			

शास्त्रोक्त 'दीपचंदी' की दुगुन के समान यह लोक ताल शहनाई की धुन के साथ ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर बजाया जाता है।

बैई ताल-

शिमला, सोलन तथा सिरमौर क्षेत्रों में 'बैई ताल' को 'भ्याई ताल' भी कहा जाता है। यह लोक ताल पुत्र जन्म के अवसर पर 'बैई' या 'भ्याई पूजन' के समय बजाया जाता है। 'बैई ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

(मात्रा - 16, विभाग - 4, खाली -1)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
झांऽ	ऽधि	ऽण	झांऽ	झांऽ	ऽधि	ऽण	झांऽ	झांऽ	ऽधि	ऽण	झांऽ	तांऽ	ऽधि	ऽण	झांऽ
x				2				3				4			

बैलाराणम ताल-

किन्नरी लोक संगीत में 'बेलाराणम ताल' देव-पूजा का ताल माना जाता है। देव पूजा से पूर्व रणसिंगा, करनाल, रागदुन आदि सुषिर वाद्यों को बजाया जाता है, जिसे स्थानीय बोली में 'बेलाराणम' कहा जाता है। तत्पश्चात् पुजारी लयात्मक शब्दों का उच्चारण करते हुए देवता की पूजा आरम्भ करता है। देवालय के बाहर लोक वाद्यों को बजाया जाता है। लोक वाद्यों पर बजने वाले लोक ताल को 'बेलाराणम ताल' कहा जाता है। 8 मात्रिक 'बेलाराणम ताल' के बोल निम्न प्रकार से हैं-

(मात्रा - 8, विभाग - 4)

1	2	3	4	5	6	7	8
धिं	ऽ	धिं	ऽ	धिं	ऽ	धिं	ऽत्रक
x		2		3		4	

अन्य प्रकार -

1	2	3	4	5	6	7	8
धिं	त्रक	धिं	त्रक	धिं	त्रक	धिं	ऽ
x		2		3		4	

मकलावा ताल-

शिमला तथा सिरमौर जनपदों में विवाहोत्सव पर जब वर वधू को लेने के लिए बारात लेकर चलता है और जब दुल्हन को विदा किया जाता है, तो इन अवसरों को 'मकलवा' कहा जाता है। इस समय लोक 'वादकों द्वारा नगाड़ा तथा दमामटू वाद्यों पर 'मकलावा ताल' बजाई जाती है। तेरह मात्रिक 'मकलावा ताल' के बोल प्रस्तुत है-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	1
तड़ाऽन	तिरकिड़	तड़ाऽन	तिरकिड़	तड़ाऽन	धिंधिं	ना	धिं	धिं	झां	तिक्ड़	धिं	ता	तड़ाऽन
x		2			3				4				x

मण्डुआ ताल-

विवाह संस्कार में जब 'मण्डुआ' अर्थात मण्डप लगाया जाता है और शांति पूजन, तेलग-बटणा आदि लेपन की क्रिया समाप्त होने पर 'मण्डुआ ताल' बजाया जाता है। नगाड़ा व दमामटू वाद्यों पर बजाई जाने वाली 16 मात्रिक ताल के बोल इस प्रकार हैं –

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	1
झांऽ	णझां	ऽण	झांऽ	झांऽ	णझां	ऽण	झांऽ	तांऽ	णतां	ऽण	तांऽ	तांत्र	कझां	ऽण	झांऽ	झांऽ
x				2				0				3				x

मरेठा ताल-

सोलन जनपद में प्रचलित यह लोक ताल 'करियाला' लोकनाट्य में 'मरेठे के स्वांग' के साथ बजाई जाती है। यह ताल शास्त्रीय 'बसन्त ताल' के समरूप प्रतीत होती है। मंगलामुखियों द्वारा ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर बजाई जाने वाली नौ मात्रिक 'मरेठा ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
झांण	झागे	नातां	णतां	ताझां	णझां	गेना	झांऽ	त्रक
x	2	3	0	4	5	0	6	0

मरण ताल-

किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर उसे शमशान घाट ले जाते समय नगाड़ा तथा दमामटू लोक वाद्यों पर 'मरण ताल' बजाया जाता है। हिमाचल के विभिन्न जनपदों में इस लोक ताल को ढड (चम्बा), ढमाल, घमसाण, ढाईया (सिरमौर), फाट, मड़ेच (शिमला, सोलन) आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। मरण ताल के प्रारम्भ में दमामटू वाद्य पर निम्न बोल बजाए जाते हैं-

बोल - टण टणण टण टणण टण टणण टण टणण टांऽ-

तत्पश्चात् नगाड़ा तथा दमामटू वाद्यों पर 28 मात्रिक 'मरण ताल' के निम्न बोलों को बजाया जाता है-

बोल-

झिण झिण तांऽ, झिण झिण झिण ताणा
झिण झिण तांऽ, झिण तांऽ झिण तांऽ
झिण झिण तांऽ, झिण तांऽ झिण तांऽ
झिण झिण तांऽ, झिण झिण झिण ताणा झिण
x

यह लोक ताल निम्न बोलों की तिहाई के साथ समाप्त की जाती है-

बोल- टण टण टण टण टण टण टण टाऽ - 3 बार

उपरोक्त तिहाई के बोल द्रुत लय में बजाए जाते हैं।

मिलणी ताल-

कुल्लवी जनपद में देवी-देवता जिस समय आपस में मिलते हैं उस समय वाद्य-वादन से वातावरण संगीतमय हो उठता है। इस समय ढोल तथा नगाड़ों पर दस मात्रिक 'मिलणी ताल' को बजाने का प्रचलन है, जिसके बोल इस प्रकार हैं-

1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	1
झांनण घिणझां	नणघिण झांनण	घिणझां नणघिण	झांनण घिणझां	नणघिण तांऽऽ	झां
x	2	3	4	5	x

रासा ताल-

सिरमौरी लोकनृत्य 'रासा' व 'माला नृत्य' के साथ हुड़क तथा दमानू वाद्यों पर करनाल, रणसिंगा तथा शहनाई की धुन के साथ 'रासा ताल' का व्यवहार देखने को मिलता है। बारह मात्रिक 'रासा ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

1 2 3	4 5 6	7 8 9	10 11 12
झिं झां ऊँ	झिं झां ऊँ	झिं झां ऊँ	झिं झिं ना
x	2	3	4

रामकड़ी ताल

'मृत्यु ताल 'रामकड़ी' में लोक वादक ढोल उछालने की अनूठी कला का प्रदर्शन करते हैं। इस लोक ताल को बजाते समय एक वादक ढोल उछालता है और दूसरा वादक उसे पकड़ता है। आज इस लोक ताल का प्रचलन लगभग समाप्त ही हो चुका है।

रूपक ताल-

चम्बा जनपद में प्रचलित ढोलरू, ऐंचली तथा नवाला उत्सव में गाई जाने वाली लोक गाथाओं में रूपक ताल के सदृश्य 7 मात्रिक लोक ताल का प्रयोग देखने को मिलता है। 7 मात्रिक 'रूपक ताल' के बोल निम्न प्रकार से बजाए जाते हैं-

1 2 3	4 5	6 7	1
धिं ऽ तिट	धिं तिट	धिं ऽ	धिं
x	2	3	x

अन्य प्रकार-

1	2	3	4	5	6	7	1
झांणा	झांणा	णक	झांणा	णक	झां	णा	झांणा
x			2		3		x

लांवां ताल-

यह लोक ताल विवाहोत्सव पर वर-वधू द्वारा वेदी के फेरे लेते समय बजाई जाती है। रूपक ताल के समरूप 7 मात्रिक 'लांवां ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6	7
तड़ान	तिण	गिण	घिण	झांझां	घिण	झांझां
x			2		3	

वारा ताल-

'वारा ताल' दुर्गा माता के पूजन के समय बजाया जाता है। ढोल तथा नगाड़ा वाद्यों पर बजाई जाने वाली 8 मात्रिक 'वारा लोक ताल' के बोल निम्न प्रकार से हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8
झां	ता	घि	ना	तां	क्ड़	धिं	ना
x				0			

शवारी ताल-

'शवारी ताल' को 'सवारी' तथा 'बेआ' भी कहा जाता है। विवाहोत्सव पर बारात प्रस्थान के समय जब वर पालकी या घोड़े पर सवार होता है तो ढोल, नगाड़ा तथा दमामटू वाद्यों पर 'शवारी ताल' को बजाया जाता है। 7 मात्रिक यह लोक ताल मध्य लय से कुछ अधिक लय में बजाया जाता है। 'शवारी ताल' के बोल इस प्रकार हैं-

1	2	3	4	5	6	7
धाऽ	गदिंगी	दिंगी	दिंगी	धाऽ	गदांगि	दांगि
x					2	

स्वांगटी गीह ताल-

सिरमौर जनपद में दिवाली तथा मशराली (बूढ़ी दीवाली) के अवसर पर आयोजित किए जाने वाले नृत्य-नाट्य 'स्वांगटी गीह' के साथ 'स्वांगटी गीह ताल' को बजाया जाता है। ढोल वाद्य पर बजाई जाने वाली 'खेमटा ताल' के समरूप 'स्वांगटी गीह ताल' के बोल निम्न प्रकार से हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
तिर	किड़	दाऽ	तिऽ	गिऽ	नाऽ	तिऽ	गिऽ	नाऽ	तिर	गिड़	दाऽ
x			2			3			4		

हुड़क वाद्य पर -

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
झिं	ज	क	झिं	जा	ऊँ	झिं	झां	ऊँ	झिं	ज	क
x			2			3			4		

संधिवा ताल-

'संधिवा ताल' चौघड़ी ताल का दूसरा प्रकार माना जाता है। 8 मात्रिक 'संधिवा ताल' देवालय में सांध्य पूजन के समय बजाया जाता है। 'संधिवा ताल' के बोल प्रस्तुत है-

1	2	3	4	5	6	7	8
धिगड़	गिना	धिगड़	धिन	ताधिना	धिन	ताधिना	धिन
x				0			

सूरजन्हाण ताल-

देव यात्रा के समय जब देवता की पालकी को मन्दिर के प्रांगण में लोगों के दर्शनार्थ रखा जाता है तो उस समय करनाल, रणसिंगा की धुन पर ढोल, नगाड़ा तथा दमामा वाद्यों पर 'सूरजन्हाण ताल' बजाया जाता है। इस ताल को 'जड़ी भरत' भी कहा जाता है। 7 मात्रिक इस लोक ताल के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6	7
धिंगड़	गेदे	गेदे	धिंगड़	गेदे	गेदे	गेदे
x		2				

सोअर ताल-

शिमला जनपद में प्रचलित यह लोक ताल किसी व्यक्ति की मृत्यु पर बजाया जाता है। यह मृत्यु ताल सूचना का साधन ही माना जाता है। समीप के गांव में जैसे ही 'सोअर ताल' बजता है तो सहज ही मालूम हो जाता है कि अमुक गांव में किसी की मृत्यु हुई है। ढोल, नगाड़ा तथा दमामा वाद्यों पर बजाए जाने वाले 16 मात्रिक 'सोअर ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धि	ना	कड़	धाऽ	तिर	किट	धिं	ना	कड़	धा	तिर	किट	धिं	ना	कड़	धाऽ
x				2				3				4			

सोरेनिसांग-

किन्नौर जनपद में प्रचलित देवी-देवताओं से सम्बद्ध विभिन्न अट्ठारह तालों को जब एक विशेष क्रम में बजाया जाता है तो उसे किन्नरी बोली में 'सोरेनिसांग' कहा जाता है। सोरेनिसांग को 'अट्ठारह राग' के नाम से भी जाना जाता है। देवी-देवताओं से सम्बन्धित अट्ठारह प्रकार की तालों के अन्तर्गत देव-पूजा, देव-यात्रा, देव-नृत्य, देवी-देवताओं के त्यौहारों तथा मालियों से सम्बन्धित तालों के दो-दो आवर्तन बजाए जाते हैं। किन्नौर जनपद में देवता की रथ यात्रा के समय बजाया जाने वाले 8 मात्रिक लोक ताल के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8
धिं	ऽता	ऽ	ता	ऽ	त्रक	धिं	धिं
x				0			

अन्य प्रकार-

1	2	3	4	5	6	7	8
धिं	ऽधिं	ऽ	त्रक	ऽ	त्रक	धिं	ऽ
x				0			

हवन ताल-

यह लोक ताल 'हवन' तथा यज्ञ करते समय नगाड़ा तथा दमामटू वाद्यों पर बजाया जाता है। 8 मात्रिक इस मंगल लोक ताल के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4	5	6	7	8
झांऽना	ऽणझां	तांऽधि	ऽणतां	तांऽना	ऽणझां	तांऽधि	ऽणतां
x				0			

हरण ताल-

कुल्लवी लोकनाट्य 'हरण' में प्रयुक्त लोक गीतों के साथ 'हरण ताल' का व्यवहार रहता है। हरण लोक नाट्य में व्यवहारित 'खेमटा ताल' के समरूप 6 मात्रिक 'हरण ताल' के बोल इस प्रकार हैं-

1	2	3	4	5	6
घिण	किणे	किणे	धिण	ऽण	घिण
x			0		

हवारा ताल-

जब देवी-देवता रूठ जाते हैं तो उस समय 'हवारा-ताल' को बजाया जाता है। कुल्लवी जनपद में प्रचलित यह लोक ताल दमामटू वाद्य पर बजाया जाता है। 4 मात्रिक 'हवारा ताल' के बोल प्रस्तुत हैं-

1	2	3	4
घिणितिता	धिंनानाना	धिंनानाना	घिणितिता
x		2	

हिमाचली लोक संगीत में प्रयुक्त लोक तालों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यहां लोक संगीत में प्रचलित ताल व शास्त्रीय संगीत की तालों में मात्राओं सम्बन्धी कुछ समानता अवश्य रहती है परन्तु कुछ एक लोक तालों की ताली व खाली स्थानों में अन्तर रहता है। यहां लोक तालों का वादन शास्त्रीय संगीत की तालों के अनुरूप ही रहता है परन्तु लोक तालों के बोल स्थानीय लोक वादकों द्वारा अपने–अपने हिसाब से उच्चारित किए जाते हैं। लोक वादकों द्वारा स्थानीय लोक वाद्यों पर बजने वाले यह लोक ताल हिमाचली जनसाधारण के मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं । स्थानीय लोक ताल हिमाचली जन-मानस के प्रत्येक पहलू से सम्पृक्त हैं और हिमाचली लोक संगीत की सौंदर्य वृद्धि में चार-चांद लगा देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. प्रो० सत्यदेव शर्मा, संगीततुषा ।
2. डॉ० नागेश्वर लाल कर्ण, कत्थक नृत्य के साथ तबला संगति ।
3. पं० शारंगदेव, संगीत रत्नाकर ।
4. संगीता, महासुई लोक संगीत में देव संगीत ।
5. डॉ० कृष्ण लाल सहगल, सिरमौरी लोकसंगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
6. सुरजीत सिंह पटयाल, किन्नर लोक संगीत का विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण ।
7. विद्यानन्द सरैक, हिमाचल प्रदेश का लोक संगीत (शोध पत्र) ।
8. उर्मिला देवी, चम्बयाली लोक गाथाओं का सांगीतिक एवं साहित्यिक विश्लेषण ।
9. डॉ० राम स्वरूप शांडिल, सोलन जिले के लोक संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
10. मोहन राठौर-हिमाचल प्रदेश का लोक संगीत, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला ।